

**मूरत स्त्री.** (तद्.) दे. मूर्ति।

**मूरति स्त्री.** (तद्.) दे. मूर्ति।

**मूरतिवन्त वि.** (तद्.) 1. मूर्तिमान 2. सशरीर, देहधारी।

**मूरा पुं.** (देश.) लंबी तथा मोटी मूली उदा. 'मूरा से भुज चारू' -रहीम।

**मूरी स्त्री.** (देश.) मूली।

**मूर्ख वि.** (तत्.) जिसमें बुद्धि न हो या बहुत कम हो, मूढ़, मंदमति, जड़, बुद्धू।

**मूर्खता स्त्री.** (तत्.) मूर्ख होने का भाव, जड़ता, अज्ञानता, मूढ़त्व।

**मूर्खत्व स्त्री.** (तत्.) मूर्ख होने की स्थिति या भाव, अज्ञानता, मूढ़त्व, जड़ता।

**मूर्खिनी स्त्री.** (तद्.) ऐसी स्त्री जिसमें बुद्धि का अभाव हो, मूर्ख स्त्री।

**मूर्खिमा स्त्री.** (तत्.) मूर्खता, अज्ञानता, मूढ़ता।

**मूर्च्छन पुं.** (तत्.) कुछ समय के लिए चेतना का लोप हो जाना, अथवा कर देना, मूर्च्छित करने का मंत्र अथवा प्रयोग वि. जड़ीभूत करने वाला, जड़ता या बेहोशी पैदा करने वाला (कामदेव के एक बाण का विशेषण)।

**मूर्च्छना स्त्री.** (तत्.) बेहोशी, चेतना की सुप्तावस्था संगी-संगीतके सातस्वरों का क्रमशः कोमलतापूर्वक कंपन युक्त आरोह (स, रे, ग, म, प ध, नि) तथा अवरोह (नि, ध, प, म, ग, रे, स)।

**मूर्च्छा स्त्री.** (तत्.) रोग, शोक, भय आदि के कारण उत्पन्न वह शारीरिक अवस्था जिस में प्राणी निश्चेष्ट या संज्ञाहीन हो जाता है, अचेतावस्था, बेहोशी।

**मूर्च्छाप्राणायाम पुं.** (तत्.) योग-हठयोग का एक प्राणायाम जिसमें श्वास को भीतर पूरा भर कर तथा कस कर जालंधर बंध लगाते हैं और छोड़ते समय भी उसी को लगाए रखते हैं, 5-6 चक्र पूरे कर लेने पर विज्ञान-नाड़ी पर दबाव पड़ने से

मूर्च्छा या संज्ञाहीनता जैसी अवस्था आ जाने के कारण इसे मूर्च्छा प्राणायाम कहते हैं।

**मूर्च्छाल वि.** (तत्.) मूर्च्छित, संज्ञाहीन।

**मूर्च्छित वि.** (तत्.) 1. जिसे मूर्च्छा आई हो, बेहोश, अचेत 2. (धातु) जिसकी क्रियाशीलता या नष्ट कर दी गई हो 3. (व्यक्ति) जो वय अथवा रोग के कारण अशक्त हो गया हो।

**मूर्छा स्त्री.** (तद्.) दे. मूर्च्छा।

**मूर्च्छित वि.** (तद्.) दे. मूर्च्छित।

**मूर्त वि.** (तत्.) 1. जिसका कोई प्रत्यक्ष रूप अथवा आकार हो, साकार 2. भौतिक, पार्थिव 3. ठोस, कड़ा 4. संज्ञाहीन 5. जड़, मूढ़।

**मूर्तता स्त्री.** (तत्.) मूर्त होने की अवस्था अथवा भाव।

**मूर्तत्व पुं.** (तत्.) मूर्त होने की अवस्था या भाव, मूर्तता।

**मूर्त-विधान पुं.** (तत्.) केवल कल्पना के आधार पर घटनाओं, कार्यों आदि के स्वरूप, चित्र आदि बनाने की क्रिया या भाव।

**मूर्ति स्त्री.** (तत्.) 1. निश्चित आकार और सीमा की कोई वस्तु, भौतिक तत्व 2. रूप, दृश्यमान आकृति, शरीर, आकृति, विग्रह, मुद्रा 3. मूर्तिमत्ता, शरीर धारण, प्रतिबिंब 4. प्रतिमा, प्रतिमूर्ति।

**मूर्तिकरण पुं.** (तत्.) किसी अमूर्त तत्व को मूर्त रूप देने की क्रिया या भाव।

**मूर्ति-कला स्त्री.** (तत्.) निश्चित आकार और सीमा की मूर्तियाँ बनाने की विद्या अथवा कला।

**मूर्तिकार पुं.** (तत्.) 1. मूर्ति बनाने वाला कारीगर, मूर्ति-शिल्पी, संगतराश।

**मूर्तिप पुं.** (तत्.) पुजारी, मूर्तिपूजक।

**मूर्तिपूजक वि.** (तत्.) जो मूर्ति अथवा प्रतिमा की पूजा करता हो, मूर्ति पूजन का अनुयायी, मूर्ति पूजने वाला।